© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

जनसंचार के दलित युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव : एक अध्ययन

Sanjeev Kumar Singh
Research Scholar (Sociology)
B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur (Bihar)

जनसंचार आज दलित युवाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। संचार का प्रमुख लक्षण जनसंचार के माध्यमों का आविष्कार तथा हमारे दैनिक जीवन में इनकी उपस्थिति है। जब से मुद्रण–यंत्र का आविष्कार हुआ है तभी से जनसंचार के साधनों में आशातीत वृद्धि हुई है। तार, दूरभाष, टेलीफोन, फैक्स, कैमरा, रेडियो तथा टेलीविजन के माध्यम से आज संसार में रूपान्तर की गति ही तीव्र नहीं हो गई अपितु इससे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, राजनीति एवं संघर्ष की प्रकृति भी परिवर्तित हो गई है। जनसंचार के माध्यमों से दलित युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव इस प्रकार हैं :–

(1) जागरूकता का विकास – जनसंचार माध्यमों ने दलित युवाओं को जागरूक करने का कार्य किया है। इसके आधुनिक साधनों ने इन युवाओं में ज्ञान का प्रसार किया है। जिस समूह या व्यक्ति के पास किसी क्षेत्र की पूरी सूचनाएँ होती हैं वह उस क्षेत्र में अपने निर्णयों द्वारा घटनाओं को प्रभावित करने में सफल हो जाता है। जन संचार के माध्यम प्रत्येक व्यक्ति के समस्त जीवनकालों में नहीं पहुँच पाते, परन्तु इनसे व्यक्ति का व्यवहार प्रभावित होता है और उसे एक निश्चित दिशा मिलती है। इसके अतिरिक्त आज सोशल मीडिया के माध्यम से भी ये लोग विचारों का आदान–प्रदान कर रहे हैं तथा इंटरनेट माध्यमों का उपयोग कर विभिन्न तथ्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

(2) शिक्षा का विकास – जनसंचार माध्यमों ने केवल अनुसूचित जाति में ही नहीं बल्कि सभी जाति एवं वर्गों के शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। शिक्षा को आधुनिकीकरण के महत्वपूर्ण पहलुओं में गिना जाता है। रेडियो और टेलीविजन का प्रयोग शिक्षा के लिए भी किया जा रहा है। वे शिक्षण के क्षेत्र में नई तकनीक के रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं। बहुत से स्कूलों में उनके द्वारा नियमित शिक्षण किया जा रहा है। जैसे–जैसे अनुसूचित जातियों में शिक्षा का विकास हो रहा है वैसे–वैसे इन जातियों में आधुनिकता का विकास हो रहा है। इस तरह हम कह सकते हैं कि ये जनसंचार माध्यम शिक्षा को प्रभावित करके आधुनिकीकरण में योगदान दे रहे है।

आज जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के फलस्वरूप आज बहुत से अनुसूचित जातियों की युवक/युवतियाँ सरकारी नौकरियों में हैं। मेडिकल, इंजीनियरिंग एवं मैनेजमेन्ट की पढ़ाई कर रहे हैं। कुछ प्रतिस्पर्द्धाओं की परीक्षा में लगे हैं तो कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इनमें अधिकांश दुसाध, चमार, धोबी तथा पासी जाति के युवा एवं युवतियाँ हैं। हमने अपने अध्ययन के लिए सात अनुसूचित जाति का चुनाव किया था जिनमें चार अनुसूचित जातियों अर्थात् दुसाध, चमार, धोबी तथा पासी के परिवार में शिक्षा का विकास हुआ है तथा तीन अनुसूचित जातियाँ अर्थात् मुसहर, मेहतर तथा डोम के युवाओं में अभी बहुत पिछड़ापन हैं तथा शिक्षा का विकास न के बराबर देखने को मिला है। हालाकि इन जातियों में भी जैसे दुसाध, चमार, धोबी तथा पासी के वैसे लोग जो सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं और अपनी परम्परागत व्यवसाय का बदलाव नहीं किये हैं उनमें अभी भी पिछड़ापन है किन्तु उनके परिवार में शिक्षा के प्रति जागृति आयी है।

(3) सामूहिक एकता को बढ़ावा देना – सामूहिक एकता निर्विवाद रूप से सामाजिक नियन्त्रण एवं आधुनिक परिवर्तन का आधार रहा है। जनसंचार माध्यम तथा सोशल मीडिया ने सामूहिक एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। समाचार–पत्र रेडियों, चलचित्र एवं टेलीविजन पर महत्वपूर्ण सामाजिक प्रश्नों के बारे में सूचनाएँ ही नहीं, वरन् अनेक मत–मतान्तर भी प्रसारित होते है। इन सभी से एकमत के निर्माण में इतनी सहायता मिलती है कि जनसंचार के माध्यम जनमत के निर्धारक कारक बन गए है। कोई भी घटना कहीं भी घटे इन माध्यमों से इन्हें जानकारी मिल जाती है और एक एकमत तथा एकजुट होकर उस समस्या के निवारण हेतु आवाज उठाने लगते हैं।

(4) अपनी संस्कृति के बारे में जागरूक होना – जन संचार के माध्यम तथा सोशल मीडिया ने अनुसूचित जातियों में संस्कृति का संरक्षण, हस्ताक्षरण एवं पुनर्स्थापना ही नही करते वरन् वे प्रमुख सांस्कृति मूल्यों के प्रति सहमति भी पैदा किया है। दुर्खीम तथा मैक्स वेबर ने मूल्यों की सहमति को सामाजिक व्यवस्था का आधार माना है। दुर्खीम के अनुसार, जब यह सहमति टुटती है तो आदर्शविहीनता (Anomie) की स्थिति पैदा हो जाती है, जो सामाजिक विघटन की परिचायक है। इससे यह सिद्ध होता है कि नवीन सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सहमति अथवा मतैक्य को बनाए रखकर जनसंचार के साधन अनुसूचित जातियों के सामाजिक परिवर्तन एवं नियन्त्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

(5) विचारधारा का प्रसार – जन संचार के माध्यम किसी विशेष विचारधारा से भी जुड़े होते हैं। समाचार–पत्र, पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि के लिए यह तथ्य और भी अधिक सत्य है। इस प्रकार, किसी विचारधारा के अधीन जन–उत्साह को सक्रिय करने का कार्य भी जन संचार के माध्यम से करते हैं। वे जनसमूहों को एक निश्चित दिशा में कार्य करने के लिए उत्प्रेरित

करते हैं। इस भाँति, जनता के व्यवहार को आधुनिकीकरण की ओर उत्प्रेरित करने में वे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(6) सामाजिक मूल्यों का विकास :– जनसंचार के आधुनिक साधनों ने दलित जातियों के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में नये मूल्य प्रस्तुत किए है। बाजार से लेकर मन्दिर, चर्च सभी जगह इनकी प्रवेश सुनिश्चित हुई है। नित्य नये–नये विकास देखने को मिलते है। अब इनमें भी बर्थ डे, मैरिज डे, फादर्स डे तथा मदर्स डे इत्यादि धूम–धाम से मनाये जाने लगे है। इनमें नया–नया फैशन देखने को मिल रहा है। दलित युवाओं में मॉडर्न कहलाने का भूत सवार हो गया है। अनुसूचित जातियों का रहन सहन जो पहले था वो बदलने लगा है, उनकी आवश्यकता के अनुसार ही उनकी अर्थव्यवस्था के साधन भी बदल गये हैं। इनके मकान में जो पहले सादगी होती थी, जब उसकी जगह तड़क–भड़क और फ्लैट ने ले लिया है।

(7) दलित महिलाओं पर प्रभाव :– दलित महिलाएँ महिला श्रमिकों के रूप में आज रोजगार के सभी क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं और कार्य करने के लगभग सभी जगहों पर उनके साथ भेदभाव, शारीरिक शोषण और दूसरे कई प्रकार के अधिकारों के हनन के मामले भी प्रकाश में आते रहे हैं। इन घटनाओं में से अधिकतर घटनाएं उभरकर सामने नहीं आते हैं जिसका प्रमुख कारण – इन महिलाओं में शिक्षा, जागरूकता और सुरक्षा की कमी रहा है। किन्तु जनसंचार के आधुनिक साधनों ने इन समस्याओं से निजात दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। आज जनसंचार ने दलित जातियों की कामकाजी महिलाओं को अपने अधिकारों से जानकारी दिलाना व किसी भेदभाव के इज्जत के साथ एक स्वच्छ सामाजिक वातावरण में रहने को जागरूकता किया है। इससे दलित महिलाओं को समाज में समानता का अधिकार प्राप्त हो रहा है तथा अर्थ–व्यवस्था में ये बराबरी के हकदार मानी जा रही हैं।

(8) मनोरंजन, खेल और कला – जन संचार के माध्यम मनोरंजन के भी सशक्त साधन हैं। सर्वेक्षणों से पता चलता है कि अधिकांश लोग मनोरंजन के लिए इनका उपयोग करते हैं। आज दलित युवाओं के लिए खेल जगत में तो इनके द्वारा क्रान्ति ही आ गई हैं, खेलों का व्यावसायीकरण होने लगा है। कला के प्रदर्शन एवं प्रोत्साहन का कार्य भी जन संचार के माध्यम कर रहे हैं। कला का प्रयोग कॉमिक्स और कार्टूनों में भी होता है। ये कॉमिक्स और कार्टून जहाँ एक ओर मनोरंजन के साधन हैं वहीं हास्य और व्यंग्य के द्वारा वे दूसरी ओर सामाजिक नियन्त्रण के साधन भी हैं। जिन राजनेताओं के कार्टून समाचार–पत्रों में प्रकाशित होते हैं और प्रातः कला वह उन्हें देखते हैं, तो निश्चय ही उनके मन पर इनकी जबरदस्त प्रतिक्रिया होती होगी। आज विविध कलाओं को चलचित्रों, रेडियों एवं टेलीविजन ने बनाए

रखा है और नवीन कलाओं को प्रोत्साहन दिया हैं। इन सभी का प्रभाव दलित युवाओं पर देखने को मिल रहा है।

(9) दलितों की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन – देश की स्वतंत्रता के बाद ही अनुसूचित जातियों और जनजातियों के कल्याण के लिए राज्य की ओर से महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। भारतीय संविधान में नागरिकों के इन समूहों को सामाजिक और शैक्षणिक रूप से अति पिछड़ा माना गया है और इनके हितों की रक्षा और इनके विकास के लिए कई महत्वपूर्ण उपबंध सम्मिलित किए गए हैं। संविधान की प्रस्तावना में भारत को संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य घोषित किया गया है। संविधान के उद्देश्यों में नागरिकों के लिए न्याय (सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक), स्वतंत्रता (विचारों, अभिव्यक्ति, विश्वास और उपासना की) तथा समानता (सामाजिक और अवसरों की) तथा भ्रातृत्व (व्यक्ति की गरिमा तथा राष्ट्र की एकता की प्रतिष्ठा का आश्वासन) सम्मिलित है।
इन सभी योजनाओं का लाभ दिलाने तथा इनके प्रति जागरूकता लाने में जनसंचार की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। जनसंचार के साधनों तथा आधुनिक साधनों ने सदियों से विभिन्न प्रकार की अशक्तताओं, अयोग्यताओं और शोषण के शिकार अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोगों के लिए संविधान के ये व्यापक उद्देश्य से परिचित कराया है तथा इनका लाभ इन्हें मिल रहा है और निरन्तर ही ये विकास की सीढ़ियों पर चढ़ रहे है।

(10) दलितों का सामाजिक एकीकरण – आधुनिकीकरण का उद्देश्य समाज के विभिन्न, वर्गो, हितों और श्रेणियों के बीच एकीकरण बनाए रखना भी होता है। जन संचार के माध्यम विभिन्न श्रेणियों के दृष्टिकोण, जीवन–शैलियों, महत्वाकांक्षाओं एवं समस्याओं के बाद में विस्तृत जानकारी देकर उनके बीच सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों के लिए धरातल प्रदान करते है। भारतीय समाज जैसे विविधता–पूर्ण बहुल समाज में सामाजिक एकीकरण आधारभूत आवश्यकता है। जिसके अभाव में समाज में असन्तुलन तनाव और विघटन पैदा होता है। ऐसे समाज में जन संचार के साधनों की एकीकरण करने वाली भूमिका की अतिरंजित प्रस्तुति नहीं की जा सकती है।

इस भाँति हम देखते हैं कि जनसंचार के साधनों तथा आधुनिक साधनों ने दलित युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावित किया हैं। यहाँ यह भी स्मरण रखने योग्य है कि ये सभी माध्यम आर्थिक–राजनीतिक–सामाजिक प्रभावों सें मुक्त नहीं है। रौसेक ने उचित ही लिखा है कि, ''सामाजिक नियन्त्रण के अभिकारणों का विश्लेषण करते समय दोनों की जाँच की जानी चाहिए कि कोई अभिकरण किन्हें और किन लक्ष्यों के लिए नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा है तथा स्वयं भी अभिकरण किन प्रभावों से प्रभावित है।'' जन संचार के माध्यम आधुनिकीकरण के

नाम पर मौलिक सांस्कृतिक मूल्यों का नष्ट भी कर सकते हैं। अतः इनकी आधुनिकीरण में भूमिका असीम नहीं है। ये व्यवसाय बनाए रखने के लिए भी प्रोग किए जा सकते हैं।

संदर्भ सूची :–

1. रामगोपाल सिंह; भारतीय दलितों की समस्याएँ एवं उनका समाधान, भोपाल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1986, पृ. 76
2. एस० एल० दोषी एवं पी० सी० जैन, भारतीय समाज : संरचना और परिवर्तन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली/जयपुर, तृतीय संस्करण – 2005, पृ० 130
3. ग्रेनविल ऑस्टिन; द इंडियन कांस्टीट्यूशन्स : कार्नस्ओन ऑफ ए नेशन, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1976, पृ. 164
4. भारत 2014, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
5. P.N. Malhan, Communication Media : Yesterday, Today and Tomorrow, D. Publication New Delhi, Page. 8-9.
6. प्रेम नारायण पाण्डेय, ग्रामीण विकास एवं संरचनात्मक परिवर्तन, रावत पब्लकेशन, जयपुर, 2000, पृष्ठ 77
7. जी० एल० शर्मा, सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2015, पृ० 191–200
8. कुरूक्षेत्र, जनवरी 2012, पृ० 18